International Scientific Journal of Engineering and Management (ISJEM) ISSN: 2583-6129
Volume: 04 Issue: 05 | May – 2025 DOI: 10.55041/ISJEM03868
An International Scholarly || Multidisciplinary || Open Access || Indexing in all major Database & Metadata

# सन 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में दलित वर्ग के अल्पज्ञात सैनानी

**Mohit[1], Dr Renu Jain[2]**

[1]Research scholar History, IIMT University, Meerut, U.P.

[2]Associate Professor History, IIMT University, Meerut, U.P.

**शोध संक्षेप–**

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में सभी वर्गो के साथ–साथ दलित वर्ग के सैनानियों की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दलित समाज के अनेको वीरो ने भारत की आजादी के लिए अपना सवर्स्व न्यौछावर कर दिया था। भारतवर्ष में दलित वर्ग के हजारों लोगों ने (पुरुष/महिला) देश के स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था। बहुत से दलित वर्ग के लोगों ने आंदोलन का नेतृत्व भी किया। अपन वतन भारत से उन्हें भी उतना ही प्रेम रहा, जितना किसी ओर को हो सकता है। भारत की स्वाधीनता, भारत के हित में बड़े से बड़ा योगदान व बलिदान देने में वे किसी से पीछे नहीं थे। पुरूषो के साथ–साथ दलित महिलाओ ने भी अंग्रेजो को समाप्त करने व आजादी प्राप्त करने में कोई कार–कसर बाकी नही छोडी। इन वीरो ने रण में वह कौशल दिखाया कि दुश्मन अंग्रेज भी यह सोचने पर विवश हो गये कि भारत का हर वर्ग उनके विरूद्व हो गया है और सम्भवतः अब भारत में उनके शासन का अन्त निश्चित है। इसके पश्चात भी अंग्रेज भारत में 90 वर्ष और अपना शासन चला पाये इसका सबसे बडा कारण अपनो की ही गद्दारी था। अंग्रेजो ने फूट डालो और राज करो की नीति इतनी चालाकी से अपनायी की अपनो को ही अपनो के विरूद्व कर दिया था। फिर भी भारत के वीर सैनानियो ने हार नही मानी और अपनी अन्तिम सांस तक अंग्रेजो का डटकर सामना किया। परतंत्रता के बावजूद भारत की नाभि में एक ऐसा अमृत–कुंभ हैं, जिसने हमें संघर्षकाल में भी हार नही मानने दी तथा निराशाओं के घने अंधकार में भी हमने आशाओ के प्रकाश का दिया जलाये रखा जो समय के साथ तपता सुरज बन गया।

**बीज शब्द– शोषित, समर, बलिदान, अमृत–कुंभ।**

**विषय प्रवेश–**

वैदिक काल में भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था के आधार पर चार वर्ग में विभाजित था जिसका विभाजन कार्यों के आधार पर किया जाता था, ना कि जन्म था। परन्तु कालांतर में लचीली वर्ण व्यवस्था के स्थान पर कठोर जाति व्यवस्था ने ले लिया था। कुछ जातियों को भारतीय समाज में सामाजिक स्तर से सबसे नीचे या अछूत/दलित माना जाता रहा हैं जैसे– चमार, पासी, बाल्मीकि, महार, धोबी, भंगी, मल्लाह आदि इन जातियों को समाज में वह सम्मान प्राप्त नहीं होता जिसकी सचमुच में ये अधिकारी हैं। क्योंकि मनुष्य का मूल्यांकन उसके जन्म के आधार पर नहीं अपितु कार्यो/कर्म के आधार पर किया जाना चाहिए। अथर्ववेद में भी कहा गया है कि '' **न दासो–नार्यो महित्वा व्रत मिमाय** ''

© 2025, ISJEM (All Rights Reserved) 

International Scientific Journal of Engineering and Management (ISJEM) ISSN: 2583-6129
Volume: 04 Issue: 05 | May – 2025 DOI: 10.55041/ISJEM03868
An International Scholarly || Multidisciplinary || Open Access || Indexing in all major Database & Metadata

अर्थात किसी को जन्म से दास या आर्य कहना गलत है उसका मूल्यांकन उसके गुणों से करना चाहिये। [1]

1757 के पश्चात अंग्रेजों द्वारा भारत के अधिकांश हिस्से पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अधिकार कर लिया गया था। अंग्रेजों ने अपनी कुटिल नीति, चातुर्य और शक्ति के वशीभूत होकर भारतीय समाज को बहुत लूटा अंग्रेज सभी भारतीयों को हीन दृष्टि से देखते थे। वे उन्हें अपने से कम आंकते थे तथा गुलामों जैसा व्यवहार करते थे। अंग्रेजों ने भारत वर्ष को इतना लूटा कि भारतीय समाज लगभग दरिद्र हो गया। गरीबी, अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा शोषण, भारतीयों के प्रति उनकी तुच्छ मानसिकता, उनकी तानाशाही के परिणाम स्वरूप भारतीय जनमानस में विरोध की भावना पनपने लगी। सन 1857 में यह विरोध की भावना एक विस्फोट के रूप में अंग्रेजों के सामने परिलक्षित हुई। इस 1857 की क्रान्ति में समाज के हर वर्ग का योगदान रहा है चाहे वह सामान्य वर्ग हो या दलित/अछूत, पुरुष हो या महिला सभी ने अपनी सामर्थ्य अनुसार इसमें योगदान दिया। स्वतंत्रता प्रत्येक का प्रकृतिप्रदत्त अधिकार हैं और इसलिए इस पवित्र अधिकार का अपहरण करने की इच्छा के अत्याचार को मिटाना भी प्रत्येक का प्रकृतिप्रदत्त कर्तव्य भी हैं। स्वतंत्रता और गुलामी के झगड़े में अंतिम जय स्वतंत्रता की होती हैं। [2] जितना योगदान 1857 की क्रांति में ओर वर्ग का था उससे कम योगदान दलित वर्ग का भी नहीं था। भारतवर्ष के हजारों दलित वर्ग के लोगों ने (पुरुष/महिला) देश के स्वाधीनता आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। बहुत से दलित वर्ग के लोगों ने आंदोलन का नेतृत्व भी किया। दलित वर्ग के लोग किसी भी मामले में किसी से कम नहीं रहा। अपने राष्ट्र भारतवर्ष से उन्हें उतना ही प्रेम रहा जितना किसी और को हो सकता हैं तथा राष्ट्र की स्वाधीनता राष्ट्र के हित में बड़े से बड़ा योगदान और कुर्बानी देने में वे किसी से पीछे नहीं थे। [3] इस वर्ग ने देश के निर्माण में सदैव अपना खून पसीना बहाया हैं।[4] स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने में अपना गौरव और कर्तव्य समझा। [5]

भारत आंदोलनकारियों का देश रहा हैं और यह कहा जा सकता है कि परतंत्रता के बावजूद भारत की नाभि में एक अमृत–कुंभ हैं जिसने हमें बुरे दिनों में भी मरने नहीं दिया तथा हमने निराशाओं के घने अंधकार में भी अपनी उपलब्धियों से संसार को चकाचौंध में डाल दिया। [6] भारत में अंग्रेजी राज की निरंकुशता क्या थी, हमारे पूर्वजों ने हमें आजादी में सांस लेने देने के लिए अपने सीने पर किस तरह संगीनों के आघात सहे थे आज हम जब उन्हें याद करते हैं तो गीता में अर्जुन का एक वाक्यांश स्मरण हो आता है **''वेपथुश्य शरीरे में रोमहर्षश्य जायते ''** अर्थात हे वासुदेव। जब तुम्हारे विराट रूप की बार–बार याद आती है तो शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।[7]

1857 की क्रान्ति में सभी वर्गो के साथ–साथ दलित वर्ग के सैनानियों की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दलित समाज के अनेको वीरो ने भारत की आजादी के लिए अपना सवर्स्व न्यौछावर कर दिया। जब भी हम उन महान लोगो की बात करते है तो आज भी हमारा सर श्रद्वा से छुक जाता है। ऐसे थे वह महान अल्पज्ञात सैनानी।

**दलित अल्पज्ञात सैनानी–**

### महावीरी देवी भंगी

महावीरी देवी का जन्म उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले की कैराना तहसील के मुंडभर गांव में हुआ था। वह भंगी जाति से संबंधित थी।[8] वीरांगना महावीरी देवी अशिक्षित थी। फिर भी उनकी बुद्धि तेज व अत्यंत विलक्षण थी। वीरता और निर्भीकता उनकी सबसे बडी विशेषता थी। बाल्यावस्था से ही साहसिक शक्तिशाली होने के साथ–साथ वह तेज स्वभाव की थी। वीरांगना महावीर देवी का पारिवारिक जीवन बड़ा कष्टमय रहा था। उनके पिता सूप–पंखा बनाने का कार्य करते थे। जो उनका पैतृक कार्य के साथ–साथ जीवन यापन का भी साधन था। गरीबी, बेकारी से पीड़ित होते हुए भी उन्होंने अपने मान–सम्मान पर कभी आंच नहीं आने दी। उन्होंने कभी भी खैरात व पकवान को स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपनी जाति के लोगों को भी इसके लिए मना करती थी।[9] महावीरी देवी सामाजिक रूप से भी काफी सक्रिय थी।[10] वीरांगना महावीर देवी ने मानो दीन दुखियों के लिए ही जन्म लिया था। उन्होंने जीवन पर्यन्त न्याय के लिए लड़ने की प्रतिज्ञा ली थी व स्वयं को उसी के लिए समर्पित कर दिया था। धीरे–धीरे महावीर देवी का यश चारों ओर फैलने लगा और जगह–जगह उनकी शौर्यता, निर्भीकता, और समाज के प्रति मर मिटने की भावना की चर्चा होने लगी। महावीरी देवी ने अपनी जाति की महिलाओं का एक संगठन बनाया था। इस संगठन का उद्देश्य घृणित कार्यों में लगी दलित महिलाओं और बच्चों को हटाना था एवं सम्मान के लिए जीना और सम्मान के लिए मरना सिखाना था। अंग्रेजों ने जब मुजफ्फरनगर को अपने अधिकार में लेने के लिए आक्रमण किया, तब इन स्वाभिमानी नारियों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया।[11] ये अपने महिला संगठन के साथ अंग्रेजों के खिलाफ डट गई।[12] महावीर देवी की टोली में 22 नारियां थी।[13]

महावीरी देवी और उनके महिला संगठन के पास आधुनिक हथियार नहीं थे। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अंग्रेजों के सामने देसी हथियार जैसे गंडासे, तलवार भाले और फरसे के साथ अंग्रेजों का सामना किया। यह देखकर अंग्रेज भौचक्के रह गए, अंग्रेजों ने यह कभी नहीं सोचा था कि उन्हें एक महिला संगठन से चुनौती मिलेगी। दोनों तरफ से भयंकर युद्ध हुआ महावीरी देवी ने अपने महिला संगठन के साथ मिलकर दो दर्जन से अधिक अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। मातृभूमि की रक्षा के लिए अंग्रेजों से लोहा लेते हुए महावीरी देवी अपनी 22 साथी वीरांगनाओं के साथ वीरगति को प्राप्त हो गयी। वीरगति को प्राप्त होने से पहले इन महिलाओ ने बता दिया कि वे भी देश के लिए मर मिटने का जज्बा दिल में रखती है। पुरूषो के साथ–साथ भारतवर्ष की महिलाओ ने भी अंग्रेजो का डटकर सामना किया व अपने अन्ति क्षणो तक लडती रही। देश के प्रति उनका त्याग और बलिदान सदैव भारतीय समाज को प्रेरणा देता रहेगा।[14]

### बांके चमार

बांके चमार का जन्म उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के मछली शहर स्थित कुंवरपुर गांव में हुआ था। तब जौनपुर में क्रांतिकारियों के कई समूह सक्रिय थे। क्रांतिकारियों के नेता हरपाल सिंह थे। बांके कि देश के प्रति दीवानगी और आंदोलन के प्रति समर्पण को देखते हुए हरपाल सिंह बांके चमार पर बहुत

भरोसा किया करते थे, साथ ही उनकी वीरता और सूझबूझ के मुरीद भी थे। बांके में देश को लेकर गजब का जज्बा था। इसी जज्बे के साथ वह अंग्रेजो के विरूद्व इस 1857 के आंदोलन में कूद पड़े। उनका अंग्रेजों से कई बार सामना हुआ लेकिन हर बार वे अंग्रेजों को चकमा देकर बच जाते थे। अंग्रेज बार–बार कोशिश करने के बावजूद भी उन्हें पकड़ नहीं पाते थे। देखते देखते बांके अंग्रेजों के लिए चुनौती बन गए। 1857 की क्रांति विफल होने पर यहां के 18 लोग बागी घोषित किए गए थे, उसमें बांके चमार का नाम प्रमुख था। अंग्रेज उन्हें पकड़ने और सजा देने के लिए बेताब हो रहे थे। आखिरकार अपने सारे प्रयास कर लेने के बाद अंग्रेजों को बांके चमार को पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा करनी पड़ी। अंग्रेजों ने उनके पकड़ने में मदद करने वाले को 50 हजार रूपये की बडी रकम देने की घोषणा की। यह भी कहा कह दिया कि बांके को जिंदा मुर्दा पकड़ने वाले को इनाम दिया जाएगा। उस वक्त में वीरा पासी के बाद बांके चमार दूसरे ऐसे क्रांतिकारी थे जिसके लिए अंग्रेजों ने 50 हजार का इनाम घोषित किया था। जिस जमाने में एक आना और दो आने की बहुत कीमत थी उस दौर में 50 हजार की कीमत आप समझ सकते हैं। उस दौर में यह रकम अंग्रेजों द्वारा घोषित की जाने वाली सबसे बड़ी रकम होती थी। एक दिन अपने एक साथी द्वारा मुखबिरी करने के बाद बांके चमार को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चला और अंग्रेजों ने उन्हे फांसी दे दी।[15]

यह वीर सैनानी अपनी मातृभूमि की रक्षा में हंसते–हंसते अपने प्राणों को न्यौछावर कर फांसी के फंदे पर झूल गया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इस महान देशभक्त क्रांतिकारी बांके चमार का नाम सदैव सदैव के लिए अमर रहेगा।[16]

**वीरा पासी**

जलियांवाला बाग के बाद दूसरे सबसे बड़े सामूहिक नरसंहार (7 जनवरी 1921) की गवाह बनी थी रायबरेली की माटी, जहां अंग्रेजों ने सैकड़ों किसानों को घेरकर बर्बरता पूर्व गोलियों से भून दिया था। उसी रायबरेली की धरती ने स्वाधीनता की लड़ाई में वीरा पासी जैसा महानायक दिया था। वीरा पासी के जन्म के संबंध में थोड़ी भ्रांति हैं। कुछ लोगों का कहना है कि वीरा का जन्म रायबरेली के भीरा गोविंदपुर गांव में हुआ था। उनके बचपन का नाम हीरा था। जबकि स्थानीय बुद्धिजीवी वीरा पासी का जन्म रायबरेली के लोधवारी गांव में हुआ बताते हैं। उनके पिता का नाम सुखवा और माता का नाम सुरजिया व बहन का नाम बतसिया था। वह बचपन से ही साहसी और निर्भीक थे। वह एक मजबुत शरीर के मालिक थे। उनकी कसरती देह किसी भी विपत्ति के लिए एक चुनौती थी। कुश्ती और कसरत वीरा का सगल था। महज 18 वर्ष की उम्र में ही वह राणा बेनीमाधव की सेना में भर्ती होने के लिए उनके महल में पहुंच गए थे। राणा ने पूछा तुम कौन हो? वीरा बोला–गोविंदपुर का वीरा हूं। राणा ने कहा– मेरी सेना में भर्ती होने से पहले तुम्हें शारीरिक इम्तहान देना होगा। वीरा तुरन्त तैयार हो गये। उसके बाद राणा बेनीमाधव ने वीरा की छाती पर दो मुक्के मारे, लेकिन वीरा टस से मस नहीं हुआ। वीरा पासी की ताकत को देखकर राणा बेनीमाधव ने उसे अपनी सेना में भर्ती कर अपना अंगरक्षक नियुक्त कर लिया। नवाब वाजिद अली शाह की गिरफ्तारी के बाद उनकी वीरांगना पत्नी बेगम हजरत महल की अगुवाई में अनेक राजा और जमींदारों ने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। इसमें रायबरेली क्षेत्र ( बैसवाड़ा ) के राणा बेनीमाधव भी शामिल थे। इस विद्रोह में राणा बेनीमाधव

International Scientific Journal of Engineering and Management (ISJEM) ISSN: 2583-6129
Volume: 04 Issue: 05 | May – 2025 DOI: 10.55041/ISJEM03868
An International Scholarly || Multidisciplinary || Open Access || Indexing in all major Database & Metadata

का मुख्य सलाहकार वीरा पासी ही था। राणा बेनीमाधव ने जब अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाया तब वीरा पासी ने उनके नेतृत्व में लड़ते हुए अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। एक बार अंग्रेजी सेना ने राणा बेनीमाधव को चारों ओर से घेर कर पकड़ लिया और उन्हें जेल में डाल दिया। उन्हें छुड़ाने के लिए किसी अपने या किसी रिश्तेदार ने कोई मदद नहीं की। तब अंग्रेजों से राणा बेनी माधव को छुड़ाने के लिए उनकी पत्नी चंद्रलेखा ने एक बीड़ा रखा, जिसे वीरा पासी ने उठा लिया था। राणा बेनीमाधव को बाल दोहका किले (वर्तमान में किला बाजार) में रखा गया था। अंग्रेजों ने इसे छावनी में तब्दील कर रखा था। वीरा पासी ने अंग्रेजों की छावनी को भेदकर बड़ी चतुराई और कुशलता के साथ राजा बेनीमाधव को जेल से निकाल बैसवाड़ा सुरक्षित पहुंचा दिया था। जिसके बाद अंग्रेज वीरा से थर्राने लगे थे। इतिहास की किताबों में दर्ज है कि अंग्रेज सरकार को रायबरेली में हर बार मुंह की खानी पड़ी थी। इसका सारा श्रेय वीरा पासी को जाता हैं। एक बार भीरा गोविंदपुर में अंग्रेजों ने जब राणा बेनी माधव को घेर लिया और निश्चिंत हो गए उनकी जान नहीं बच पाएगी, तब वीरा ने अपने बाहुबल से राणा बेनीमाधव को सकुशल निकाल लिया था। कहा जाता हैं कि इस लड़ाई में वीरा का घोड़ा मारा गया था। इस महानायक ने अंग्रेजों को लोहे के चने चबावा दिए थे। वीरा पासी के खौफ का आलम यह था कि उसके साहस और ताकत से अंग्रेजों की रूह कांपती थी। इस योद्धा से खौफजदा होकर अंग्रेजी सरकार ने वीरा पासी को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए 50 हजार का इनाम घोषित किया था। आप इस बात को समझ सकते हैं कि तब के जमाने में 50 हजार की कीमत क्या होती होगी, परन्तु 1857 के विद्रोह में जितना बड़ा योगदान इस दलित नायक का था, उसे उतना सम्मान नहीं मिल पाया। आलम यह है कि इस योद्धा की याद में बरेली में आज तक कोई स्मारक तक नहीं हैं।[17]

## उदा देवी पासी

1857 ई0 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली प्रमुख वीरांगनाओं में उदा देवी पासी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता हैं। उदा देवी पासी लखनऊ की रहने वाली थी। उदा देवी के विषय में विस्तृत जानकारी का अभाव है, परंतु इतना ज्ञात होता हैं कि इनका ससुराल का नाम जगरानी था। उदा देवी पासी अवध के छटे नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्या थी। उदा देवी पासी ने वर्ष 1857 ई0 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय क्रान्तिकारियों की ओर से युद्ध में भाग लिया।[18] अंग्रेज अधिकारी कॉलिन कैंपबेल के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना जब 14 नवंबर 1857 को लखनऊ शहर की ओर चली, तब सारा दिन विद्रोही और अंग्रेजों के बीच छीना झपटी में शाम हो गयी और शाम के समय अंग्रेजी सेना दिलखुश बाग तक शहर जीती चली गई थी। वहां रात गुजारने की इच्छा से सर कॉलिन कैंपबेल ने अंग्रजी सेना का डेरा डलवा लिया। उस रात भी विद्रोहियों के छुटपुट हमले बीच–बीच में होते ही रहे। तब भी अंग्रेजी सेना ने इसकी परवाह न करते हुए वहीं रात गुजारी। दूसरे दिन कैंपबेल ने अपनी सेना को तारीख 16 नवंबर 1857 को लखनऊ पर जंगी हमले करने का आदेश दिया। आदेश पाते ही अंग्रेजी सेना उछलकर लखनऊ के सिकंदरबाग पर टूट पड़ी। शहर के इस भाग तक अंग्रेज सेना को विद्रोहियों ने कोई उल्लेखनीय समस्या खड़ी नहीं की थी।[19] लखनऊ की घेराबंदी के समय लगभग 2000 भारतीय सिपाहियों की शरण स्थली

International Scientific Journal of Engineering and Management (ISJEM) ISSN: 2583-6129
Volume: 04 Issue: 05 | May – 2025 DOI: 10.55041/ISJEM03868
An International Scholarly || Multidisciplinary || Open Access || Indexing in all major Database & Metadata

सिकंदराबाद बाग बना हुआ था। सिकंदर बाग की लड़ाई के दौरान उदा देवी पासी ने पुरुषों के वस्त्र धारण किए हुए थे। उसने स्वयं को एक पुरुष के रूप में तैयार किया था। लड़ाई के समय वह सिकंदरबाग में अपने साथ एक बंदूक और कुछ गोला बारूद लेकर एक ऊंचे पेड़ पर स्थान लिए हुए थी। उदा देवी ने हमलावर ब्रिटिश सैनिकों को सिकंदर बाग में तब तक नहीं घुसने दिया जब तक कि उनका गोला बारूद समाप्त नहीं हो गया। उदा देवी 32 अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार कर वीरगति को प्राप्त हुई। ब्रिटिश सैनिकों ने उन्हें उस समय गोली मारी जब गोला बारूद खत्म होने के बाद वह पेड़ से उतर रही थी। उसके बाद जब ब्रिटिश लोगों ने बाग में प्रवेश किया तो उन्होंने उदा देवी का पूरा शरीर गोलियों से छलनी कर दिया। [20] इस युद्ध का उल्लेख करते हुए विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी पुस्तक 1857 के स्वतंत्रता समर में उल्लेख किया है कि सिकंदरा बाग पर कोई ऐसा वीर नियुक्त था जिसने उस बाग में युद्ध का भयंकर खेल रचा था। सिकंदरा बाग के पास लड़ाई लड़ने वाला योद्धा कोई सामान्य मनुष्य नहीं होगा। वह तो स्थान छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था। विजय या मृत्यु। मृत्यु या जय। शाबाश वीर शाबाश। स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले वीर को यही गर्जना शोभा देती हैं। जब वह सारा स्थान अंग्रेजों ने जीत लिया तब ध्यान में आया कि उस बाग में 2 हजार विद्रोहियों के शव पडे हुए हैं। 2000 वीरों का रक्त सिकंदर बाग में देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ते–लड़ते शहीद हो गये। अ महान वीरो तुम्हारी उस पवित्र स्मृति में यह इतिहास अर्पित हैं।[21] लंदन टाइम्स के संवाददाता विलियम हावर्ड रसेल ने लड़ाई के समाचारों का जो डिस्पैच लंदन भेजा था। उसमें पुरुष वेशभूषा में एक स्त्री द्वारा पीपल के पेड़ से गोलियां चलाने तथा अंग्रेज सेना को भारी क्षति पहुंचाने का उल्लेख प्रमुखता से किया गया था। संभवतः लंदन टाइम्स में छपी खबरों के आधार पर ही कार्ल मार्क्स ने भी अपनी टिप्पणी में इस घटना को समुचित स्थान दिया था। यद्यपि यह लड़ाई अंग्रेजों ने काफी संघर्ष के बाद जीत ली थी। कहा जाता है कि उदा देवी की स्तब्ध कर देने वाली वीरता से अभिभूत होकर अंग्रेज अधिकारी कॉलिन कैंपबेल ने हेड उतारकर शहीद उदा देवी को श्रद्धांजलि दी थी।[22]

महान वीरांगना, देशभक्त उदा देवी पासी के इस बलिदान को पूरा भारतवर्ष सदैव याद रखेगा, तथा उनके बलिदान का ऋणी रहेगा। उनका यह बलिदान भारतवर्ष कभी नहीं भुला पाएगा। ऐसी महान देशभक्त उदा देवी पासी को शत–शत नमन।

## चेतराम जाटव और बल्लू

जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था, मान मर्यादा और आत्मसम्मान के साथ जीना अत्यंत कठिन व दुष्कर था। प्रत्येक भारतवासी को सन्देह और हीन दृष्टि से देखा जाता था। अंग्रेज अधिकारी, अछूतों को तो कौन कहे, बड़े–बड़े सामंतों और नवाबों को भी गाली दे देते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, शेख, पठान सभी को एक चाबुक से हांकते थे। घोर अपमान और तिरस्कार की जिंदगी जीते हुए भारतीयों के मन में झोभ वह असंतोष ने जन्म लिया। 10 मई 1857 को क्रांति का बिगुल बज चुका था। हजारों की संख्या में देशभक्त घरों से निकलकर क्रांति के कारवां में शामिल हो गए थे। उन्हीं देशभक्तों में चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर भी थे। चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर दोनों मित्र थे और एटा जनपद के सोरों क्षेत्र के अंतर्गत आते थे। यह दोनों ही अछूत व अति निर्धन परिवारों से थे। इनके पिता निर्धन

© 2025, ISJEM (All Rights Reserved)

अवश्य थे, लेकिन उनमें देशभक्ति और आत्मसम्मान कूट–कूट कर भरा था। उन्हीं संस्कारों में दोनों मित्रों का पालन पोषण होने के कारण ये गुण इनमें भी विद्यमान थे। एटा जनपद में बैरकपुर क्रांति का समाचार मिलते ही क्रांतिकारियों का काफिला सड़कों पर आ गया था। मिस्टर हाल और मिस्टर फिलिप्स जो एटा जनपद के तत्कालीन अधिकारी थे, क्रांतिकारियों को काबू में करने की तैयारी करने लगे। जगह जगह सख्त पहरा कर दिया गया। किसी पर जरा सा भी शक होने पर कठोर दंड दिया जाने लगा, किंतु क्रांति की ज्वाला तीव्र रूप में भड़क उठी थी। जिसकी लपटें संपूर्ण जनपद में फैल गई थी। 24 मई 1857 को एटा में क्रांति का ज्वालामुखी मानो फूट पड़ा, सैकड़ों देशभक्तों ने अंग्रेजों के विरुद्ध खुला संघर्ष छेड़ दिया। 26 मई 1857 को सोरो क्षेत्र की क्रांति की ज्वाला में चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर ने देश को आजाद कराने और अपने प्राणों की आहुति देने, इस संग्राम में कूद पड़े। इस क्रांति में उनके साथ सदाशिव मेहरे, रामनाथ तिवारी, चतुर्भुज वैश्य, सदासुखराम सक्सेना, विशम्भर कोटेदार, द्वारिका प्रसाद, तथा हाफिज रजब अली के साथ–साथ अनेक लोग शामिल थे। अंग्रेज अधिकारी फिलिप्स की सेना से इन देशभक्त सपूतों का घमासान युद्ध हुआ। इनकी वीरता, बुद्धिमता व साहस के सामने अंग्रेज सेना भाग खड़ी हुई, लेकिन आगरा और मैनपुरी से नई अंग्रेजी कुमुक आ जाने से पासा पलट गया। सभी क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर को जो इस क्रांति के प्राण थे, पेड़ से बांधकर गोलियों से उड़ा दिया गया। बाकि क्रांतिकारियों को कासगंज ले जाकर पेड़ों पर लटका कर फांसी दे दी गई। लगभग 10 देशभक्त क्रांतिवीरों वीरगति पायी। इस तरह इन महान देशभक्तों ने मातृभूमि भारत मां की मर्यादा और रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, और सदा–सदा के लिए अमर हो गए। चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर के साथ अन्य क्रांतिकारी देशभक्तों ने उत्सर्ग की भावना में अपने प्राणों को देश पर न्योछावर कर दिया। उनकी शौर्यता, वीरता तथा साहस पर हर देशवासी को सदा गर्व रहेगा।[23]

## झलकारी बाई

वीरांगना झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1820 ई0 को झांसी के समीप भोजला नामक गांव में एक दलित कोरी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम सदोवा था। झलकारी बाई को औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने का अवसर तो नहीं मिला किंतु वीरता और साहस उनमें बचपन से ही विद्यमान था।[24] एक बार झलकारी के घर कुछ भिक्षुक आए भिक्षुकों ने झलकारी को देखकर कहा था की ''वह नए युग का निर्माण करेगी, झलकारी इतिहास बनाएगी'' ।[25] बड़ी होने पर झलकारी की शादी झांसी के पूरनलाल (पूरन कोरी) से हो गई थी।[26] पूरन कोरी राजा गंगाधर राव के दरबार में एक मामूली सिपाही था। प्रारंभ में झलकारी घरेलू महिला थी। झलकारी अपने पति के पैतृक पेशा कपड़ा बुनने का कार्य करती थी। उनका पारिवारिक जीवन अत्यंत संघर्षमय था। कभी–कभी झलकारी अपने पति के साथ राजमहल भी जाती थी।[27] झांसी में बसंत के मौसम में एक त्यौहार होता था। इसे हल्दी कु–कुम कहा जाता था। इस त्योहार को मनाने सारे नगर की नारियां झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के पास उनके महल में जाती थी। पहली बार इन्हीं स्त्रियों के साथ झलकारी बाई रानी लक्ष्मी बाई से मिलने उनके महल में गई थी। झलकारी का रंग सांवला था, बाकी चेहरा रानी की आकृति, आंख, नाक से बहुत मिलता–जुलता था। ये देखकर रानी लक्ष्मी बाई का भी आश्चर्य हुआ, और अन्य स्त्रियों के मन में भी

ISSN: 2583-6129
DOI: 10.55041/ISJEM03868

काफी कौतूहल हुआ। रानी ने झलकारी से मुस्कुराकर पूछा कौन हो तुम ? उत्तर मिला– सरकार हो तो कोरिन। रानी फिर से पूछा नाम क्या हैं ? उत्तर– झलकारी दुलैया। झलकारी बोली महाराज एक बात कहनी हैं– मोरे घर में पुरिया पूरबे कौ और कपड़ा बुनबे कौ काम होत आऔ हैं। पर उनने अब कम कर दऔ हैं। मलखंब, कुश्ती और न जाने काका करन लगें, अब सरकार घर कैसे चलै। रानी लक्ष्मीबाई बोली यह तो तुम्हारे पति बहुत अच्छा काम करते हैं। तुम भी मलखंब कुश्ती सीखो इनाम दूंगी। घोड़े की सवारी भी सीखो।[28]

झलकारी बाई ने अपने पति पूरन कोरी से सभी सैनिक गुणों जैसे– तीर, तलवार, बंदूक चलाना, तथा घुड़सवारी आदि में निपुणता प्राप्त कर ली थी। यह सैन्य शिक्षा भविष्य में उसके बहुत काम आयी। [29] झलकारी के सैनिक गुणों के परिणाम स्वरूप रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें अपनी महिला सेना में शामिल कर लिया, और बाद में उनकी वीरता व साहस को देखते हुए उन्हें महिला सेना का सेनापति बना दिया। झांसी के अनेक राजनीतिक घटनाक्रमों के बाद जब रानी लक्ष्मीबाई का अंग्रेजों के विरुद्ध निर्णायक युद्ध हुआ। [30]तब झलकारी बाई का पति पूरन कोरी व भाऊ बक्शी, कोरिया की सेना के साथ अंग्रेजों का नरसंहार कर रहे थे। उस समय तक संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। ऐसी नाजुक स्थिति में झलकारी बाई ने बड़ी सूझबूझ का परिचय दिया और रानी से मंत्रणा की।[31] इसके पश्चात वीरांगना झलकारी बाई ने बलिदान और राष्ट्रभक्ति की अद्भुत मिसाल पेश की।[32] झलकारी बाई ने एक योजना सोची और उसको क्रियान्वित करने का निश्चय किया। झलकारी ने अपना श्रृंगार किया बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहने ठीक उसी तरह जैसे लक्ष्मीबाई करती थी गले का हार न था परंतु कांच की गुड़िया का कंठा था उसको गले में डाल लिया।[33] झलकारी बाई का चेहरा रानी लक्ष्मीबाई से मिलता ही था उसी सूझ–बूझ और रणकौशल का परिचय देते हुए वह स्वयं रानी लक्ष्मीबाई बन गई और असली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को सकुशल किले से बाहर निकाल दिया।[34] रानी लक्ष्मीबाई किले से बाहर बहुत दूर जा चुकी थी। तब झलकारी बाई ने अपने आपको लक्ष्मीबाई घोषित कर अंग्रेजों का संहार करते हुए घनघोर युद्ध किया। उसका मुख्य उद्देश्य था, अंग्रेजों को सारे दिन लड़ाई में उलझायें रखना ताकि रानी बिठूर के सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाए। झलकारी बाई घोड़े पर सवार होकर अंग्रेजी सेना पर भारी पड़ रही थी उसने अनेक अंग्रेज सिपाही और सैनिक अधिकारियों को मार गिराया घमासान युद्ध प्रलय का तांडव, अंग्रेज सेना के पल भर में पैर उखड गए। झलकारी अंग्रेजों के लिए मौत की आंधी बन चुकी थी, तभी एक सनसनाती हुई गोली उनके शरीर को चीरती हुई आर–पार हो गयी। उनका घोडे से गिरना किया था, शरीर सैंकडों गोलियों से छलनी हो गया। रानी लक्ष्मीबाई के प्रति सच्ची मित्रता, मातृभूमि की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए वीरांगना झलकारी बाई वीरगति को प्राप्त हो कर अमर हो गई। वीरांगना झलकारी बाई का नाम भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। उनका त्याग, बलिदान व आदर्श भारतीय समाज के लिए हमेशा अनुकरणीय रहेगा।[35]

**निष्कर्ष–**

© 2025, ISJEM (All Rights Reserved)

International Scientific Journal of Engineering and Management (ISJEM) ISSN: 2583-6129
Volume: 04 Issue: 05 | May – 2025 DOI: 10.55041/ISJEM03868
An International Scholarly || Multidisciplinary || Open Access || Indexing in all major Database & Metadata

1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण पल था, जिसमें सभी वर्गों और समुदायों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत को आजाद कराने के लिए लड़ाई लड़ी। यद्यपि मुख्यधारा के इतिहास में बहुत से वीरो को लगभग नजरअंदाज कर दिया गया है। जिसमें दलित योद्धाओं के योगदान को भी अपेक्षित सम्मान प्राप्त नही हो सका, उनके द्वारा किया गया संघर्ष और बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का अविभाज्य अंग है जिसके बिना 1857 की क्रान्ति का इतिहास अधुरा है।

दलित वीर योद्धाओं ने सीधे युद्धक्षेत्र में ब्रिटिश शासन का विरोध व सामना किया और कई वीर सैनानियों ने अद्वितीय साहस का परिचय दिया। झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई की भांति ही बहादूरी दिखाते हुए झांसी की रक्षा में अंग्रेजों का सामना किया। उदा देवी ने अवध क्षेत्र में ब्रिटिश आर्मी से लोहा लिया और अपने अद्वितीय रण कौशल से कई अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। बाके के खौफ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज से 168 वर्ष पहले उन पर अंग्रेजों द्वारा 50 हजार का ईनाम रखा गया था। रायबरेली के वीर वीरा ने तो अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। इस क्रान्ति में चेतराम और बल्लू का योगदान भी अविस्मरणीय रहा था।

इस महान क्रान्ति में दलितों की भागीदारी एक सैन्य संघर्ष ही नहीं थी, यह सामाजिक अन्याय के खिलाफ भी एक बड़ा आंदोलन था। यह जातीय भेदभाव के विरुद्ध उनके संघर्ष को बहुत मजबूती प्रदान करता हुआ उनकी स्थिति को एक नए परिप्रेक्ष्य में रखने में मदद करता है, परन्तु 1857 के संग्राम में दलित वीरो के योगदान को इतिहास में जो स्थान प्राप्त होना चाहिए था वह नहीं हुआ। ब्रिटिश दस्तावेज और भारतीय इतिहासकारो ने भी सबसे अधिक अपदस्थ राजाओ, रानियों, प्रमुख नेताओं, अंग्रेजो से क्रुद्ध जमींदारो पर ही ध्यान दिया व उनके ही विषय में लिखा। जबकि दलितों और सामान्य जनमानस का योगदान सीमित रूप से ही दर्शाया गया।

इस ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि स्वतंत्रता संग्राम में दलित योद्धाओं की भूमिका पर व्यापक शोध किया जाए और उन्हें भारतीय इतिहास में उचित सम्मान प्रदान किया जाए। इतिहासकारों, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस दिशा में सार्थक प्रयास करना चाहिए ताकि सही ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य सामने आ सकें।

इन महान वीर सेनानी जैसे झलकारी बाई, उदा देवी, वीरा पासी, बांके चमार और अन्य दलित वीरो की बहादुरी केवल इतिहास में ही दर्ज नही करानी चाहिए, बल्कि उनकी कहानियों से भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरणा भी लेनी चाहिए। यह लड़ाई सामाजिक न्याय, देशभक्ति और समानता के लिए एक प्रेरक शक्ति बन सकती है, जिससे समाज में जातिगत भेद कम हो और समरसता की भावना विकसित हो।

1857 का संग्राम दलित वर्ग के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता व देश की आजादी का ही संघर्ष नहीं था, यह सामाजिक बराबरी और न्याय की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम था। उनके बलिदान को नमन करना व उनके विषय में ज्यादा से ज्यादा शोध करना हमारा दायित्व है ताकि इतिहास के पृष्ठों पर उनके योगदान को उचित स्थान मिल सके।

भारत की स्वतंत्रता पर मर मिटने वाले बलिदानियों की कोई जाति नहीं होती।

सब होते हैं मां भारती के लाल अलग कोई परजाति नहीं होती।।

वंदनीय है हर वो भारतवासी जिसने जां लुटा दी देश पर।

उनसे श्रेष्ठ ना उनसे महान ईश्वर की कोई रचना उनकी भातिं नहीं होती।।

सन्दर्भ :–


1. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, गौतम बुक सेन्टर दिल्ली, 2007, पृ0 25।
2. डा0 देवसरे हरिकृष्ण, 1857 स्वतंत्रता का महासंग्राम, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0लि0 दिल्ली, पृ0 65।
3. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 प्रकाशकीय।
4. पूर्वोक्त, पृ0 23।
5. पूर्वोक्त, पृ0 16।
6. दीपंकर आचार्य, स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, जनमत प्रकाशन, 1993, पृ0 8,9।
7. पूर्वोक्त पृ0 2.।
8. दास अशोक, डा0 राय पूज, 50 बहुजन नायक, दास पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2022, प0ृ 71।
9. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 43,44.।
10. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 71।
11. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 43,44.।
12. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ 71।
13. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 44.।
14. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 71।
15. पूर्वोक्त, पृ0 57।
16. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 50।
17. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 41,42।
18. पूर्वोक्त, पृ0 69,70.।
19. सावरकर दामोदर विनायक, 1857 का स्वतंत्रता समर, प्रभात पैपर बैक्स नई दिल्ली, 2017 पृ0 303।
20. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 70।
21. सावरकर दामोदर विनायक, 1857 का स्वतंत्रता समर, पूर्वोक्त, पृ0 303,304।
22. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 69,70।
23. दिनकर डी0सी0. स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान. 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 48,49.।
24. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 51।
25. नैमिशराय मोहनदास, वीरांगना झलकारी बाई, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2003, पृ0 41।
26. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 51।
27. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 37।
28. वर्मा लाल वृंदावन, झांसी की रानी–लक्ष्मीबाई, मयूर प्रकाशन झांसी, 1956, पृ0 97।

29. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 37.।
30. दास अशोक, 50 बहुजन नायक, पूर्वोक्त, पृ0 51,52।
31. दिनकर डी0सी0. स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 40.।
32. दास अशोक, पूर्वोक्त, पृ0 52।
33. वर्मा लाल वृंदावन, झांसी की रानी—लक्ष्मीबाई, पूर्वोक्त, पृ0 424।
34. दास अशोक, पूर्वोक्त, पृ 52।
35. दिनकर डी0सी0, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान, पूर्वोक्त, पृ0 41,42.।